अर्चना कुमारी
अतिथि, शिक्षक, हिन्दी
पी. आर. कॉलेज, रोसड़ा

हिन्दी कहानी के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालें।

गद्य की विधाओं में कहानी का महत्वपूर्ण स्थान है। अंग्रेजी की छोटी कहानियां के अनुकरण पर सर्वप्रथम बंगला में 'गल्प' नाम से वैसी ही छोटी कहानियां लिखी जाने लगी बाद में उनसे प्रभावित होकर हिन्दी कहानीकारों ने छोटी-छोटी कहानियाँ लिखी ~~कहानी से माना है~~

कुछ विद्वानों ने हिन्दी कहानी का आविर्भाव ईसा उल्ला खां लिखित 'रानी केतकी की कहानी' से माना है। लेकिन इस कहानी में आधुनिक कहानी के लक्षण नहीं पाये जाते हैं। इसी तरह की दूसरी कहानियां राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द लिखित 'राजा भोज का सपना' और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कृत 'अद्भुत अपूर्व सपना' या 'कुछ आप बीती तथा कुछ जगबीती' भी दृष्टिगोचर होती है। पर इन कहानियों में सभी तत्वों का विकास नहीं हुआ है। साथ ही, इन कहानियों में न घटनाओं का तारम्य है, न चरित्र-निरूपण में मनोवैज्ञानिकता।

इस प्रकार हम देखते है, कि भारतेन्दु और उनके समकालीन लेखकों के सामने

कहानी का रूप पूर्णतः स्पष्ट नहीं हो पाया था। अंग्रेजी लेखक लैंब के द्वारा लिखी गयी शेकसपीयर के घटनाओं को कहानियों के अनुवाद से कहानियों की कुछ रूप रेखा सामने अवश्य आ रही थी।

सच तो यह है कि 'सरस्वती' पत्रिका से ही हिन्दी कहानी का वास्तविक प्रारंभ होता है। एक ओर सरस्वती में अंग्रेजी और संस्कृत नाटकों के अनुवाद छपते थे, तो दूसरी ओर बंगला कहानियाँ के अनुवाद भी छपते थे। इस प्रकार सरस्वती द्वारा हिन्दी कहानी के विकास को बड़ा बल मिला। सन् 1900 ई० में सरस्वती पत्रिका के प्रथम अंक में किशोरीलाल गोस्वामी लिखित 'इन्दुमति' कहानी आयी जो हिन्दी की पहली मौलिक कहानी है। सन 1902 में किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'गुलबहार' और मास्टर भगवान दास कृत 'प्लेग की चुड़ैल' शीर्षक कहानियां प्रकाशित हुई। सन 1903 ई० में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखित 'ग्यारह वर्ष का सपना', बंगमहिला लिखित 'दुलाई वाली', गिरिजाशंकर वाजपेयी रचित 'पंडित पंडितानी' नामक तीन कहानियाँ प्रकाशित हुई 1907 ई० में बंग महिला कृत 'जमुना का न्याय' वृन्दावन लाल वर्मा कृत

'राखी बन्द भाई' और मैथली शरणगुप्त लिखित 'नकली किला' शीर्षक कहानियाँ प्रकाश में आयी। इस प्रकार कहानी के विकास में सरस्वती पत्रिका का योगदान निरन्तर होता रहा।